17 फरवरी 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 19
फरवरी(द्वितीय), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अपूर्व अवसर!! मंगल आमंत्रण!!

एक नए उत्साह के साथ...
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट धूमधाम से मनाने जा रहा है....

10वाँ वार्षिकोत्सव

(शुक्रवार, 25 फरवरी से रविवार, 27 फरवरी, 2022 तक)

2012 में आयोजित पंचतीर्थ जिनालय के ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के दसवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में त्रि-दिवसीय समारोह का भव्य आयोजन अनेक मांगलिक अनुष्ठानों सहित किया जा रहा है।

- अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के **लाइव प्रवचन**
- प्रसिद्ध गायक गौरव सोगानी एवं श्रीमती दीपशिखा सोगानी द्वारा **''भरत का अंतर्द्वन्द्व'' काव्य की लाइव प्रस्तुति**
- प्रवचनसार महामण्डल विधान का **भव्य आयोजन**
- युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा **प्रवचनसार विधान का विशेष स्पष्टीकरण**
- महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों द्वारा **प्रवचनसार पर संगोष्ठी**
- स्नातकों से प्रेरणास्पद **संवाद**
- पंचतीर्थ स्थित जिनबिम्बों का **महामस्तकाभिषेक**
- बहुचर्चित कृति ''भरत का अंतर्द्वन्द्व'' का **संगीतमय लोकार्पण**
- महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा **प्रवचनसार पर संगोष्ठी**
- परमागम ओनर्स का वार्षिक **विशेष कार्यक्रम**

विद्वत्-समागम

तत्त्ववेता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर
डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर
पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित बिपिनजी शास्त्री, मुम्बई
पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर
पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर

- आध्यात्मिकसत्पुरूष श्री कानजीस्वामी एवं अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के **प्रवचनों का प्रसारण**
- 1991 एवं 2012 में सम्पन्न भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की **स्मृतियों का पुन: अवलोकन विडियो क्लिप्स के माध्यम से**

इस अवसर पर आयोजित समस्त कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण **PTST** के यूट्यूब चैनल, **WWW.PTST.LIVE** एवं **ज़ूम ऐप** के माध्यम से किया जा रहा है आप सभी घर बैठे इस कार्यक्रम का इष्ट मित्रों सहित अवश्य लाभ लेवें।

YouTube PTST | WWW.PTST.LIVE | zoom ID : 9785643202 Passcode : 1008

दैनिक कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी पृष्ठ क्रमांक 07 पर प्रकाशित की गई है।

31 सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

सातवें अध्याय में निश्चयाभासी की शिथिलाचार पोषक युक्तियों का निषेधकर अब उसकी स्वच्छन्दता का निषेध करते हैं –

निश्चयाभासी की स्वच्छन्दता और उसका निषेध...

१) **शास्त्राभ्यास को निरर्थक बतलाता है।** उसे कहते हैं कि भाई तुझे शास्त्राभ्यास निरर्थक लगता है; किन्तु मुनिराजों के तो ध्यान और अध्ययन दो ही कार्य कहे गए हैं। जब ध्यान में उपयोग न लगे तब अध्ययन में उपयोग लगाने का उपदेश है; अत: शास्त्राभ्यास निरर्थक कैसे हुआ? शास्त्राभ्यास द्वारा तत्त्वों को विशेष जानने से तो सम्यग्दर्शन–ज्ञान निर्मल होते हैं, कषायें मन्द होती हैं, आगामी काल में वीतरागभाव की वृद्धि होती है; अत: ऐसे कार्य को निरर्थक न मानकर इसी में उपयोग लगाना चाहिए।

२) **द्रव्यादिक के तथा गुणस्थान–मार्गणास्थान–त्रिलोकादि के विचार को विकल्प ठहराता है।** उससे कहते हैं कि यदि द्रव्यादिरूप विकल्प नहीं होंगे तो नियम से तीव्र रागादिरूप विकल्प होंगे; क्योंकि छद्मस्थदशा में निर्विकल्पपना तो सदा रहता नहीं और उपयोग की एकाग्रता का उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहुर्त मात्र कहा है। यदि वह कहे कि मैं तो केवल आत्मस्वरूप का ही अनेक प्रकार से चिन्तन करूँगा तो बिना विशेष के सामान्य चिन्तन कितने समय तक चल सकेगा? विशेष चिन्तन के लिए गुणस्थानादि व द्रव्यादि का विचार तो करना ही पड़ेगा। यदि कोई कहे कि स्वर्गादि त्रिलोक सम्बन्धी चर्चा करने से तो राग–द्वेष बहुत होते हैं। उससे कहते हैं कि इनके अध्ययन से रागादिक बढ़ते नहीं है; अपितु घटते हैं।

इसप्रकार द्रव्यादि का चिन्तवन करना, गुणस्थान की चर्चा करना, त्रिलोक आदि का स्वरूप समझना – ये सब कार्यकारी है; अत: इन्हें विकल्प व राग–द्वेष बढ़ाने वाला कहना योग्य नहीं है।

३) **तपश्चरणादिक को वृथा क्लेश ठहराता है।** उसे कहते हैं कि तुझे अनशनादिक से द्वेष हुआ; इसलिए इन्हें क्लेश कहता है, तो ऐसी परिणति तो संसारियों के ही पाई जाती है, मोक्षमार्गी होने पर तो इससे उल्टी परिणति चाहिए। यदि कहे कि सम्यग्दृष्टि भी तो तपश्चरण नहीं करते। उसे कहते हैं कि उनमें शक्ति अधिक ना होने से वे कर नहीं पाते; लेकिन अन्तरंग में उन्हें करने योग्य तो मानते हैं और उसके साधन का उद्यम भी करते हैं; परन्तु तू तो उन्हें क्लेश समझता है, तेरे तो श्रद्धान में ही खोट है।

४) **व्रतादि को बंधन में पड़ना मानता है।** उसे कहते हैं कि अज्ञानदशा में स्वच्छन्द प्रवृत्ति होती थी, अब ज्ञान प्राप्त होने पर स्वमेव ही हिंसादि के कारणों का त्यागी होता है। यदि जबरदस्ती त्यागी होता तो बंधन कहलाता। व्रतादिक से तो परिणामों में निर्मलता और आत्मस्वरूप के निकट जाने का अवसर मिलता है। जब पंचेन्द्रिय के विषय–भोगों से उपयोग हटेगा, तभी तो आत्म आराधना की ओर लगेगा।

कोई कहे कि प्रतिज्ञा करने से तो बंध जाते हैं? उससे कहते हैं कि जिन प्रतिज्ञाओं का निर्वाह न हो सके उन प्रतिज्ञाओं को नहीं लेना; क्योंकि प्रतिज्ञा लेते समय यदि यह अभिप्राय रहे कि निर्वाह न होने पर छोड़ दूंगा, तो वह प्रतिज्ञा कार्यकारी नहीं है। प्रतिज्ञा ग्रहण करते समय तो ऐसा परिणाम होना चाहिए कि मरते–दम तक नहीं छोड़ूँगा; क्योंकि प्रतिज्ञा के बिना अविरति सम्बन्धी बन्ध नहीं मिटता। जब–तक रात्रि भोजन, जमीकन्द आदि के त्याग की प्रतिज्ञा नहीं होगी, तब–तक इनका सेवन नहीं करने पर भी कर्म बन्ध होता रहेगा; अत: व्रतादिक को बंधन मानना भूल है।

५) **पूजनादि कार्य को शुभास्रव जानकर हेय मानता है।** उसे कहते हैं कि यदि इन कार्यों को छोड़कर शुद्धोपयोग में प्रवृत्ते तब तो भला ही है; परन्तु यदि विषय–कषायरूप अशुभोपयोग में प्रवृत्ते और फिर पूजनादि को हेय कहे तो यह योग्य नहीं है।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में तो शुभ और अशुभ दोनों को समान ही कहा है? उसे कहते हैं कि अशुद्धता और बन्धन की अपेक्षा से दोनों को समान कहा है; परन्तु शुभ और अशुभ दोनों का परस्पर में विचार करें, तो शुभभावों में कषायें मन्द होती हैं, स्वर्गादिक होते हैं, कर्मों की स्थिति–अनुभाग घट जाते हैं; जबकि अशुभभावों में कषायें तीव्र होती हैं, नरक–निगोद होते हैं, कर्मों की स्थिति–अनुभाग बढ़ जाते हैं। इसप्रकार सिद्धान्त में अशुभ की अपेक्षा शुभ को भला कहा जाता है।

जिसप्रकार रोग थोड़ा हो या बहुत हो बुरा ही है; परन्तु बहुत रोग की अपेक्षा से थोड़े रोग को भला कहते हैं। उसीप्रकार राग शुभ हो या अशुभ बुरा ही है; परन्तु अशुभराग की अपेक्षा से शुभराग को भला कहते हैं। अत: जब–तक शुद्धोपयोग न हो तब–तक अशुभ से छूटकर शुभ में प्रवर्तना योग्य ही है; किन्तु शुभ को छोड़कर अशुभ में प्रवर्तना योग्य नहीं है।

इसप्रकार अनेक व्यवहार कार्यों का उत्थापन करके जो स्वच्छन्दपने को स्थापित करता है, उसका निषेध किया।

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें - इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 981 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 151 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./ नेट/ जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है।

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य **संस्कृत विश्वविद्यालय** की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में **B. A.** के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, नेट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो **(M.A.)** के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र जून 2022 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित (35) है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल उपलब्ध न हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

(यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें साक्षात्कार प्रक्रिया में रहना अनिवार्य होगा।) **- डॉ. शान्तिकुमार पाटील**(प्राचार्य)

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 45 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो? यदि हाँ..... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को अवश्य प्रेरित करें। **प्रवेश हेतु साक्षात्कार प्रक्रिया की सूचना यथासमय दी जायेगी। - पण्डित जिनकुमार शास्त्री**(उपप्राचार्य)

-: फॉर्म मंगाने का पता :-

पण्डित जिनकुमार शास्त्री (उपप्राचार्य) (8903201647) (8072446379) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur67@gmail.com**

रजि.नं. A803(N)

तीर्थधाम ज्ञानायतन के तत्त्वावधान में

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

नेहरू पुतला, इतवारी, नागपुर, (महा) 440002

भारत देश की हृदयस्थली नागपुर में 14वर्षों से शुद्ध तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अग्रणी संस्थान

साक्षात्कार शिविर :- शुक्रवार, 15 अप्रैल से रविवार, 17 अप्रैल 2022

महावीर विद्या निकेतन सिंहावलोकन

- सातवी से दसवी तक की सर्वोत्तम अध्यापन व्यवस्था
- लौकिक अध्ययन के साथ धार्मिक एवं नैतिक संस्कार
- अंग्रेजी तथा सेमि अंग्रेजी के माध्यम से लौकिक शिक्षा
- अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि विषयों की अनुभवी शिक्षकों द्वारा कोचिंग
- व्यक्तित्व विकास के साथ शारीरिक विकास हेतु विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताऐं
- शैक्षणिक एवं धार्मिक यात्रा
- उत्तम सुविधाओं से युक्त संकुल
- विशिष्ट विद्वानों का समागम

*** प्रवेश-प्रक्रिया ***

सातवी कक्षा में प्रवेश इच्छुक छात्र 31 मार्च 2022 तक अपने प्रवेश फॉर्म कार्यालय में जमा करा देवें।

*** साक्षात्कार शिविर ***

15 अप्रैल से 17 अप्रैल तक

(छात्र को अभिभावक के साथ शिविर में उपस्थित रहना अनिवार्य है।)

संपर्क सूत्र

मंत्री	निर्देशक	संयोजक	उपसंयोजक	समिती सदस्य	प्रबंधक
अशोक कुमार जैन	डॉ. राकेश शास्त्री	नरेश जैन	विशाल मोदी	पं. विनित शास्त्री	पं. सुदर्शन शास्त्री
8788663913	9373005801	9373100022	9822700944	8439222105	9403646327

अधीक्षक : पं. भूषण शास्त्री 8857868455 | पं. मोहित शास्त्री 8239450359

Online फॉर्म भरने के लिए इन नंबरों पर संपर्क करे।

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा
पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित
श्री कुन्दकुन्द–कहान
दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह
विद्यार्थी गृह की विशेषतायें
■ गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्यापन
■ पूज्य गुरुदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
■ छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
■ लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
■ समय–समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
■ सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
■ शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
■ सभी सुविधायें पूर्णतः निःशुल्क
■ लगभग सभी खेलों की सुविधा
■ धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
■ वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
■ विशाल पुस्तकालय की सुविधा
■ कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
■ साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास
■ छठवीं कक्षा में प्रवेश
प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ
प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि
31 मार्च 2022
संपर्क
श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़, जि.भावनगर, सौराष्ट्र गुजरात
फोन : 02846-244510, सोनू शास्त्री-9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री-7405439519,
विराग शास्त्री-9300642434, अनंकांत शास्त्री - 9898192106, प्रियम शास्त्री - 9887986898
आप प्रवेश फार्म हमारी वेबसाइट www.kahanshishuvihar.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं ।
E-mail : kahanshishuvihar@gmail.com

द्वितीय शतक : रोला शतक

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

एकत्व–विभक्त आत्मा

(गतांक से आगे...)

हर अन्तर्मुहूर्त्त में जो अन्तर्मुख होते।
महा तपस्वी परम अहिंसक महाव्रती जो।।
नय–प्रमाण के विशेषज्ञ हैं शान्तचित्त हैं।
ऐसे अद्‌भुत नग्न दिगम्बर जैन गुरु हैं।। ४० ।।

ऐसे देव–शास्त्र–गुरु एवं नव तत्त्वों के।
श्रद्धानी श्रावक होते हैं सम्यग्दृष्टि।।
यह व्यवहार कथन है लेकिन निश्चय से तो।
आतम के अनुभवी जीव हैं सम्यग्दृष्टि।। ४१ ।।

देहादिक परद्रव्यों में अपनापन जिनके।
रागादि विकारी भावों में भी अपनापन है।।
पर्यायों में रमे रहें अपनापन करके।
मिथ्यादृष्टि जीव डूबते भवसागर में ।। ४२ ।।

करणलब्धि में एक साथ पैदा होते हैं।
निश्चय दर्शन–ज्ञान–चरित तीनों ही निश्चित।।
पूरण होते हैं क्रमशः यह बात अलग है।
पर पैदा होते हैं वे तो एक साथ ही।।४३।।

करणलब्धि भी ध्यान रूप है सब जग जानें।
कर्मनाश आरम्भ यहीं से होता भाई।।
मिथ्यात्वकर्म के साथ अनन्त–अनुबन्धी का भी।
तो अभाव भी इसी अवस्था में होता है।।४४।।

आत्मज्ञान अर आत्मध्यान ही परम धरम हैं।
इनसे ही भव का अभाव होता है भाई।।
भव्यजीव इनके बल पर भवसागर तरते।
अधिक कहें क्या भवसागर से पार उतरते।। ४५।।

अतः आत्मा को जानों उसमें जम जावो।
सहज जानना होने दो उसमें रम जावो।।
अरे जानने का तनाव मत करो बन्धुवर!।
सहज जानना सहज भाव से ही होने दो।। ४६।।

सहज जानने का विकल्प भी नहीं करो तुम।
पार पड़ेगी नहीं विकल्पों से हे भाई!।।
क्योंकि विकल्पातीत कहा भगवान आत्मा।
विकल्पजाल में वह कैसे आ सकता भाई?।।४७।।

सहज ज्ञान को सहजभाव से ही होने दो।
सहज ध्यान को सहजभाव से ही होने दो।।
ज्ञान–ध्यान में सहज सहजता ही होती है।
रंचमात्र असहज होने का काम नहीं है।। ४८।।

असहज होना चिन्तित होने जैसा ही है।
एवं चिन्ता के निरोध को ध्यान कहा है।।
चिन्तन भी तो चिन्ता का ही एक रूप है।
अतः ध्यान में चिन्तन का भी तो निरोध है।। ४९।।

सहज जानना और जानते रहना केवल।
सहज भाव में ज्ञान ज्ञान बस ज्ञान–ज्ञान है।।
अरे जानना ज्ञान जानते रहना भाई!।
ज्ञानभाव की पुनरावृत्ति सहज ध्यान है।। ५०।।

प्रतीसमय का ज्ञेय ज्ञान का निश्चित ही है।
और ज्ञान का उसमें ही स्थिर हो जाना।।
शान्त भाव से अरे एकदम शान्त भाव से।
उसमें ही जम जाना एकदम थिर हो जाना।। ५१।।

यह थिरता ही ध्यान कही जाती है भाई!।
इसकी ही महिमा अपार है पार नहीं है।।
यह है वचनातीत विकल्पातीत कही है।
यह शब्दों में कही नहीं जा सकती भाई!।।५२।।

(क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शुक्रवार, 25 फरवरी 2022

प्रातः – 06.08 से डॉ. भारिल्ल के अरिहंत चैनल पर प्रवचन प्रसारण।
06.50 से श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान।
09.00 से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार विषय पर प्रवचनों का प्रसारण एवं महाविद्यालय के छात्रों द्वारा मुख्यबिन्दु प्रस्तुति।
10.00 से ध्वजारोहण एवं उद्घाटन समारोह।
10.30 से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन प्रसारण एवं मुख्यबिन्दु।
दोपहर – 02.30 से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सी.डी प्रवचन।
03.00 से महाविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रवचनसार विषय पर गोष्ठी।
सायं – 07.00 से श्री जिनेन्द्र भक्ति एवं आध्यात्मिक पाठ।
07.45 से प्रथम प्रवचन – पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली।
08.30 से द्वितीय प्रवचन – अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर।
09.15 से 2012 के पंचकल्याणक की झलकियाँ।

शनिवार, 26 फरवरी 2022

प्रातः – 06.08 से डॉ. भारिल्ल के अरिहंत चैनल पर प्रवचन प्रसारण।
06.50 से श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान।
09.00 से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार विषय पर प्रवचनों का प्रसारण एवं महाविद्यालय के छात्रों द्वारा मुख्यबिन्दु प्रस्तुति।
10.00 से गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचन प्रसारण एवं मुख्यबिन्दु।
दोपहर – 02.30 से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सी.डी प्रवचन।
03.00 से महाविद्यालय के स्नातको द्वारा प्रवचनसार विषय पर गोष्ठी।
सायं – 07.00 से श्री जिनेन्द्र भक्ति एवं आध्यात्मिक पाठ।
07.45 से प्रथम प्रवचन – डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर।
08.30 से द्वितीय प्रवचन – अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर।
09.15 से स्नातक परिवार से साक्षात्कार।

रविवार, 27 फरवरी 2022

प्रातः – 06.08 से डॉ. भारिल्ल के अरिहंत चैनल पर प्रवचन प्रसारण।
06.50 से श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं श्री प्रवचनसार महामण्डल विधान।
09.00 से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार विषय पर प्रवचनों का प्रसारण एवं महाविद्यालय के छात्रों द्वारा मुख्यबिन्दु प्रस्तुति।
10.00 से भव्य शोभायात्रा एवं महामस्तकाभिषेक।
दोपहर – 03.30 से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सी.डी प्रवचन।
04.00 से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन प्रसारण।
सायं – 06.45 से श्री जिनेन्द्र भक्ति एवं आध्यात्मिक पाठ।
07.20 से संगीतमय 'भरत के अंतर्द्वंद्व' का भव्य लोकार्पण एवं गायक कलाकारों के द्वारा काव्य की लाइव प्रस्तुति।
08.00 से परमागम ऑनर्स का वार्षिक विशेष कार्यक्रम।

वैराग्य समाचार

1) नवरंगपुरा निवासी **श्रीमती सुरेखाबेन मेहता** ध.प. अजितभाई मेहता का 3 जनवरी 2022 को देहावसान हो गया। महाविद्यालय के विद्यार्थियों के प्रति आपका अटूट वात्सल्य था। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा 31,000 रुपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

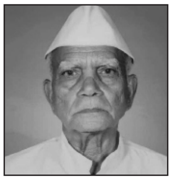

2) डासाला निवासी **श्री भव्यचंद्रजी बेलोकर** का 20 जनवरी 2022 को देहपरिवर्तन हो गया। आप ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर के भाई एवं गुरुदेवश्री के परम भक्त थे। आप आदिनाथ दिग. जैन मन्दिर चिखली, श्री महावीर दिग. जैन मन्दिर एवं श्री शान्तिसागर दिग. जैन सैतवाल शिक्षण प्रसारक फण्ड डासाला के अध्यक्ष थे।

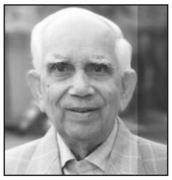

3) जयपुर निवासी **श्री नथमलजी झांझरी** का 29 जनवरी 2022 को शांत परिणामों सहित आकस्मिक निधन हो गया। विदित है कि आप एक सच्चे आत्मार्थी थे एवं 50-60 वर्षों से टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों के समर्थक थे। आप प्रतिवर्ष मालवीय नगर में शिविरों का आयोजन भी करते थे।

4) पिड़ावा निवासी **श्री सुरेशकुमारजी जैन** का 31 जनवरी 2022 को 67 वर्ष की आयु में शान्त परिणामों सहित अकस्मात् देह–वियोग हो गया। आपने गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लिया। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा 1100 रूपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

5) उगार्र–खुर्द निवासी **श्री अशोकजी बन्नुरे** का 01 फरवरी 2022 को चिर–वियोग हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र शान्तिनाथ बन्नुरे के पिताश्री थे।

6) अछरौनी निवासी **श्रीमती कमालबाईजी जैन** का 10 फरवरी 2022 को में देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल स्मारक के स्नातक श्री रमेशचन्दजी 'दाऊ' की माताश्री थीं।

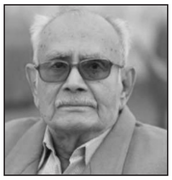

7) जयपुर निवासी सरल स्वभावी, कर्त्तव्यनिष्ठ **डॉ. समन्तभद्रजी पापड़ीवाल** का 10 फरवरी 2022 को शांत परिणामों सहित देह वियोग हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बडा मन्दिर के पूर्व मंत्री थे।

दिवंगत आत्माएँ अतिशीघ्र अभ्युदय को प्राप्त करें।

सन्मति संस्कार में वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कोटा (राज.) : यहाँ 29 से 31 जनवरी 2022 तक सन्मति संस्कार संस्थान में द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहणकर्ता श्री ज्ञानचन्दजी कोटा एवं श्री सुरेन्द्रकुमारजी कोटा रहे।

इस अवसर पर श्री नवदेव मण्डल, श्री सर्वज्ञदेव एवं श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान पं. अशोकजी उज्जैन, पं. अभिनयजी शास्त्री एवं पं. दीपमजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ, जिसमें डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित जयकुमारजी कोटा के व्याख्यानों का लाभ मिला।

समयसार पर द्वि-दिवसीय गोष्ठी का आयोजन हुआ; जिसमें पं. अभयकुमारजी देवलाली, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पं. आलोकजी कारंजा, पं. सुनीलजी राजकोट, पं. खेमचन्दजी उदयपुर, डॉ. दीपकजी जयपुर, पं. निलयजी आगरा, पं. सुनीलजी देवरी, पं. संयमजी खनियांधाना का लाभ मिला। रात्रि में पं. गणतंत्रजी द्वारा कवि-सम्मेलन व विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

सम्पादक संघ की विचार गोष्ठी सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ ने 30 जनवरी 2022 को विचार गोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें समाज की समस्याओं पर मंथन किया गया। कार्यक्रम श्री शैलेन्द्रजी जैन की अध्यक्षता में डॉ. अखिलजी बंसल द्वारा संगठन के परिचय से प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि श्री व्ही.के. जैन लखनऊ, डॉ. राजमलजी पुणे, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा, प्रो. प्रेमसुमनजी उदयपुर, श्री जमनालालजी हपावत, डॉ. श्रेयांशजी, डॉ. जयकुमारजी, डॉ. मणीन्द्रजी दिल्ली, डॉ. जयकुमारजी कर्नाटक, श्री स्वदेशजी भूषण पंजाब, श्री सुधीरजी, श्री विनोदजी मैसूर, प्रो. संजीवजी भानावत, श्रीमती पारुलजी दिल्ली, डॉ. सुरेन्द्रजी भारती, श्री पवनजी घुवारा, पं. विजयकुमारजी मुम्बई, श्री आशीषजी भिण्ड, डॉ. ऋषभजी ललितपुर एवं श्री राकेशजी आबूधाबी ने विचार रखे।

19वाँ वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

मङ्गलायतन : यहाँ 1 फरवरी 2022 को वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत प्रात:काल श्री महावीर पंच कल्याणक विधान, दोपहर में ब्र. कल्पनाबेनजी द्वारा धवला-वाचन, रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, पण्डित सचिनजी अकलूज द्वारा प्रवचन, मूलाचारजी वाचना एवं समयसार कलशों के शुद्ध उच्चारण आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस आयोजन में श्री जैनबहादुरजी जैन कानपुर, श्री अनिलजी जैन बुलन्दशहर, श्री अम्बुजजी जैन मेरठ, श्री विनयजी ओसवाल, श्री मुकेशजी जैन अलीगढ़, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज आदि उपस्थित थे। विधि-विधान के सभी कार्य पण्डित ऋषभजी जैन, डॉ. विवेकजी जैन, श्री अनुजजी जैन छिन्दवाड़ा ने पूर्ण कराए। – सचिन्द्र जैन

आचार्य कुन्दकुन्द जन्मजयंती के अवसर पर

1) नागपुर : यहाँ 5 फरवरी को श्री कुन्दकुन्द दिग. स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा आयोजित स्मरणांजलि सभा की अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री ने की। सभा में पं. विपिनजी शास्त्री, पं. रविन्द्रजी शास्त्री, पं. संयमजी शास्त्री, पं. संदीपजी जैनी, डॉ. स्वर्णलताजी जैन, विदुषी शिल्पाजी मोदी ने अपने विचार रखे।

2) कोटा : यहाँ 5 फरवरी को आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन मुमुक्षु आश्रम के विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन गोष्ठी आयोजित की गई। यह गोष्ठी डॉ. शुद्धात्मजी मुंबई की अध्यक्षता, श्री अश्वनीजी दिल्ली के मुख्यातिथ्य, पं. प्रभातजी शास्त्री के विशिष्टातिथ्य एवं पं. संजयजी शास्त्री व पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री के समागम में सम्पन्न हुई।

3) जयपुर : यहाँ श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बडा मन्दिर में आचार्य कुन्दकुन्ददेव की भक्तिभाव से विशिष्ट पूजन श्री विजयकुमारजी सौगानी, पं. समकितजी शास्त्री, पं. अनेकान्तजी शास्त्री एवं पं. आकाशजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुई।

इस प्रसंग पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक व्याख्यान हुआ। साथ ही रात्रि में भी आचार्य कुन्दकुन्द के उपकारों को स्मरण करते हुए सारगर्भित प्रवचन हुआ, जिसका 8-10 हजार लोगों ने यूट्यूब के माध्यम से लाभ लिया।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2022

प्रति,